JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसूचित जातियों में व्यवसायिक गतिशीलताः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जनपद के थलीसैंण ब्लॉक के विशेष सन्दर्भ में)

चन्द्र प्रकाश
पीएच.डी. शोधार्थी समाजशास्त्र
इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला
वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव
शोध निर्देशक / प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग
इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला
वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

सारांश

राष्ट्र अपनी आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। निःसंदेह, हमारे देश ने उस समय से अब तक बहुत प्रगति की है। कृषि आज भी भारतीय जनसंख्या का मुख्य आधार है, हालांकि पिछले कुछ दशकों में ग्रामीण कामगारों के रूझान में व्यवसायिक परिवर्तन पारंपरिक व्यवसाय से गैर पारम्परिक व्यवसाय की ओर देखा गया है। पारम्परिक रूप से अनुसूचित जातियों को संपत्ति के अधिकार से वंचित रखा गया। सौंपे गए व्यवसायिक तथा सामाजिक काम की प्रणाली के रूप में जाति पदानुक्रम ने अनुसूचित जातियों को व्यवसायिक क्षेत्र की परिधि से बाहर कर दिया और इसलिए आर्थिक गतिशीलता से भी अनुसूचित जातियों के उद्धार तथा उनके बीच आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा देने के लक्ष्य से सरकार ने अनेक कल्याण कार्यक्रमों की कल्पना की और उन्हें कार्यान्वित किया। इस तरह के नीतिगत हस्तक्षेप का प्रभाव अुनसूचित जाति की व्यवसायिक स्थिति पर पड़ा है। इस बात का मूल्यांकन करना सार्थक होगा। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जातियों के बीच आजीविका के पैटर्न में गतिशीलता की जांच करना है। विशेष रूप से शोध व्यवसायिक विविधीकरण के प्रमुख पहलुओं क्रमशः पारम्परिक व्यवसाय व गैर पारम्परिक व्यवसाय में लगे हुए व्यक्तियों और पारम्परिक व नवीन व्यवसाय में अंतर पीढ़ी गतिशीलता व अन्तःपीढ़ी गतिशीलता की जांच करता है।

प्रस्तावना

पुरातन कालों में अनुसूचित जातियों को व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं थी, उन्हें मजबूत निम्न कोटी का और घृणित व्यवसाय करना पड़ता था। लेकिन आजादी के बाद, संविधान निर्माण के पश्चात् इन जातियों के लिये विशेष शैक्षिक, आर्थिक व अन्य सामाजिक उपबन्ध किये गये जिसके फलस्वरूप अनुसूचित जातियों ने अपनी दशा व दिशा दोनों में उल्लेखनीय परिवर्तन किया। आज इन जातियों में अन्तर पीढ़ीगत व्यवसायिक गतिशीलता अपनी चरम सीमा पर है। ये जातियां अपना घृणित व्यवसाय त्यागकर नवीन व्यवसायों को अपना रही है, और भारतीय समाज के विकास के लिये अपना सम्पूर्ण योगदान दे रहीं हैं, जिसका प्रतिफल भारतीय अर्थव्यवस्था को मिल रहा है। फलस्वरूप अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता तेजी से प्रफुल्लित हो रही है।[1]

सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक उथल–पुथल और आन्दोलनों न केवल पारम्परिक मूल्यों को प्रभावित किया है, बल्कि नैतिक मूल्यों को भी चुनौती दी है। इस परिवेश ने भारत जैसे विकासशील राष्ट्र को प्रभावित किया है। भारतीय आबादी का एक बड़ा वर्ग जिसे अछूत कहा जाता है, सदियों से अपने सम्मान व बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित था उन्हें कई मानवीय अक्षमताओं से गुजरना पड़ा। इसके अलावा जो सबसे अधिक प्रबल कारक था, वह अस्पृश्यता थी। पूर्व में अछूत (अब अनुसूचित जाति के रूप में नामित) समाज में सबसे निचले पायदान पर काबिज थे, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक रूप में

भी इन जातियों पर निर्योग्यताएं लादी गयी थी, लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में संविधान निर्माण के फलस्वरूप इन जातियों के लिए विशिष्ट प्रावधान इनके सामाजिक–आर्थिक उत्थान के लिये किये गयें। इनको विभिन्न क्षेत्रों में आरक्षण का लाभ दिया गया, ताकि सामाजिक प्रस्थिति को सुधारा जा सके। नतीजतन इन जातियों ने अपनी शैक्षणिक उन्नति के फलस्वरूप अपनी सामाजिक–आर्थिक दशाओं में व्यवस्थित एवं उल्लेखनीय परिवर्तन किया। वर्तमान समय में ये जातियां सामाजिक पायदान में अपनी स्थिति को ऊपर उठाने का प्रयत्न लगातार कर रही है।[2]

व्यवसायिक गतिशीलता वास्तव में वास्तविक श्रम आय को संशोधित करती है और बदले में किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को बदल देती है। व्यवसायिक गतिशीलता अनुसूचित जाति के उत्थान के मामले में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। क्योंकि वे अति प्राचीन काल से अधीन हैं। वे अभी भी निम्न स्थिति वाले निश्चित व्यवसायों में लगे हुए हैं। यदि वे ऊपर की ओर व्यवसायिक गतिशीलता दिखाने में सक्षम हैं तो उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में निश्चित रूप से सुधार होगा।[3] लेकिन अनुसूचित जाति की आबादी की व्यवसायिक गतिशीलता पर इस तरह के अध्ययन बहुत कम हैं। इस प्रकार वर्तमान कार्य में अनुसूचित जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। एक स्वस्थ और सन्तुलित विकास को बढ़ावा देने के लिए तर्कसंगत योजना और क्षेत्रीय असमानताओं के वैद्य न्यूनीकरण के लिए व्यवसायिक गतिशीलता का विश्लेषण आवश्यक है। ऐतिहासिक सामाजिक बहिष्कार का प्रभाव लम्बे समय तक इन जातियों पर रहा है, लेकिन वर्तमान समय में इन जातियों की व्यवसायिक स्थितियों में गतिशीलता आधी है। इन जातियों को पेशा चुनने की स्वतंत्रता मिली है, जिसके फलस्वरूप अनुसूचित जातियों के व्यक्तियों ने अपनी इच्छा के अनुसार अपने व्यवसायों में परिवर्तन किया है। इन जातियों ने अपने पारम्परिक व्यवसायों में परिवर्तन किया है या व्यवसायों को उन्नत किया है, जो जातियां घृणित व्यवसायों में लगी हुई थी उन जातियों ने अपना व्यवसाय छोड़कर नवीन व्यवसायों को चुना है, तथा इन जातियों के व्यक्ति की रूचि सरकारी व अन्य पदों की ओर बढ़ी है। जिससे इन जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता के नवीन प्रतिमान स्थापित हुये हैं। शोध कार्य के दौरान किये गये वैयक्तिक अध्ययन के फलस्वरूप ज्ञात हुआ कि थलीसैंण विकासखण्ड के एक गांव सैदरी में रहने वाले व्यक्ति **''जयलाल''** जोकि अपना पारम्परिक व्यवसाय बैण्ड बजाने का कार्य करते थे, उन्होंने अपनी शैक्षणिक स्थिति को सुधारकर न केवल प्राथमिक शिक्षक की नौकरी हासिल की बल्कि अपने पारम्परिक व्यवसाय को भी आधुनिकता से जोड़कर आधुनिक बनाया है।

जगन कराडे (2009):– जगन कराडे द्वारा अनुसूचित जातियों की व्यवसायिक गतिशीलता पर किये गये शोध में इन्होंने महाराष्ट्र राज्य के एक स्थान कोलहापुर में 186 उत्तरदाताओं को शोध के लिये चुना। प्रस्तुत शोध में डॉ0 जगन कराडे द्वारा निष्कर्ष निकाला गया कि अनुसूचित जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता, शिक्षा तथा सामाजिक–आर्थिक दशाओं के अनुकूल होने के कारण बढ़ी है। सरकार द्वारा बेहतर नियोजन के कारण इन जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता भी बढ़ी है।[4]

फलक बुटूल (2018):– ने अनुसूचित जाति के श्रमिकों में व्यवसायिक गतिशीलता के अपने अध्ययन में उत्तर प्रदेश के बहराइज जिले में कैसरगंज ब्लॉक के पचंभा गांव में एक अध्ययन किया और पाया कि व्यवसायिक गतिशीलता वास्तव में वास्तविक श्रम आय को संशोधित करती है और बदले में किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक–आर्थिक प्रोफाइल को बदल देती है। व्यवसायिक गतिशीलता अनुसूचित जातियों के उत्थान में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर रही है।[5]

संध्या महापात्रों और रेणु चौधरी (2022):– ने अपने शोध अनुसूचित जातियों में अन्तर्पीढ़ीगत शैक्षणिक एवं व्यवसायिक गतिशीलता में ग्रामीण बिहार के क्षेत्रों में किये गये अध्ययन में कहा कि राज्य की बेहतर नीतियां व कल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन पर ध्यान देना अनुसूचित जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता के लिये उत्तरदायी हो सकता है।[6]

अध्ययन क्षेत्रः– प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के जनपद पौड़ी गढ़वाल में स्थित थलीसैंण विकासखण्ड है। सामाजिक–आर्थिक व भौगोलिक दशाएं प्रस्तुत अध्ययन के लिये उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करती है।

शोध–पद्धतिः– प्रस्तुत शोध थलीसैंण विकासखण्ड के 306 व्यक्तियों पर किया गया, जिन्हें सउद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा चुना गया। प्रस्तुत शोध में वर्णानात्मक व अन्वेक्षणात्मक शोध अभिकल्प के प्रयोग से प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के एकत्रीकरण के फलस्वरूप अन्तिम निष्कर्ष पर पहुंचा गया। प्रस्तुत शोध में अवलोकन व साक्षात्कार पद्धति के आधार पर आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के व्यावसायिक गतिशीलता के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी। प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणीः 1

उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय के आधार पर विवरण–

आपका पैतृक व्यवसाय क्या है/था?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि	65	21.24
टेलर	34	11.11
मिस्त्री	60	19.61
ठठेरा	40	13.07
लौहार	36	11.76
बाजकी	32	10.46
अन्य	39	12.75
कुल	306	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 21.24 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय कृषि था/है, 11.11 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय टेलरिंग, 19.61 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय मिस्त्री कार्य करना, 13.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय ठठेरा, 11.76 प्रतिशत उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय लौहारी, 10.46 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय बाजकी है तथा 12.75 उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय अन्य प्रकार का था/है।

सारणीः .2

उत्तरदाताओं का वर्तमान व्यवसाय के आधार पर विवरण–

आपका वर्तमान व्यवसाय क्या है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
परम्परागत व्यवसाय	85	27.78
नौकरी पेशा	56	18.30
अन्य	165	53.92
कुल	306	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात होता है कि 27.78 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत व्यवसाय करते है, जबकि 18.30 प्रतिशत उत्तरदाता का व्यवसाय नौकरी पेशा तथा सर्वाधिक 53.92 प्रतिशत उत्तरदाता वर्तमान में अन्य प्रकार का व्यवसाय में लगे हुये है।

सारणीः 3

उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय में परिवर्तन के आधार पर विवरण–

क्या आपने अपने पैतृक व्यवसाय में परिवर्तन किया है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	201	65.69
नहीं	105	34.31
योग	306	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 65.69 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार लोगों ने अपने पैतृक व्यवसाय में परिवर्तन किया है, जबकि 34.31 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जवाब नहीं में है।

सारणी: 4

उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय से आय संबंधी विवरण–

आपके पैतृक व्यवसाय से कितनी आय होती है?		
उत्तरदाताओं की वर्षिक आय	आवृत्ति	प्रतिशत
1 लाख से 2 लाख	120	39.22
3 लाख से 5 लाख	50	16.34
5 लाख से अधिक	34	11.11
1 लाख से कम	102	33.33
कुल	306	100

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 39.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी पैतृक व्यवसाय से 1 लाख से 2 लाख वर्षिक आय होती है, 3 से 5 लाख तक की वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 16.34 है तथा 5 लाख से अधिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 11.11 है जबकि 1 लाख से कम वार्षिक आय वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 33.33 है।

सारणी: 5

उत्तरदाताओं का परम्परागत व्यवसाय छोड़ने के आधार पर विवरण–

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
व्यवसाय की हीनता के कारण	138	45.10
कम आर्थिक लाभ के कारण	98	32.03
अन्य	70	22.87
योग	306	100

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 45.10 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने व्यवसाय की हीनता के कारण अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ना चाहते हैं, तथा 32.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार कम आर्थिक लाभ के कारण अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ना चाहते हैं, जबकि 22.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अन्य कारणों से अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ना चाहते हैं।

सारणी: 6

उत्तरदाताओं का पैतृक व्यवसाय को वर्तमान में अपने बच्चों को स्थानन्तरित करने के आधार पर विवरण–

क्या आप अपने पैतृक व्यवसाय को वर्तमान में अपने बच्चों को स्थानन्तरित करेंगे?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	131	42.81
नहीं	175	57.19
योग	306	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 42.81 प्रतिशत उत्तरदाता कहते हैं कि वे अपने बच्चों को अपना पैतृक व्यवसाय स्थानान्तरित करेंगे, जबकि 57.19प्रतिशत उत्तरदाता कहते हैं कि वे अपने बच्चों को व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करेंगे।

सारणीः 7

उत्तरदातओं को मिलने वाले उचित कार्य अवसर के आधार पर विवरण–

क्या आपको नवीन व्यवसाय में उचित कार्य अवसर मिलते हैं?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	220	71.90
नहीं	86	28.10
कुल	306	100

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 71.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उचित कार्य के अवसर मिलते हैं, जबकि 28.10 प्रतिशत उत्तरदाता कहते हैं कि उनको उचित कार्य अवसर नहीं प्रदान होते हैं।

सारणीः 8

उत्तदाताओं का कार्य के दौरान उचित वेतन दिये जाने के संबंध में विवरण–

क्या आपको उचित वेतन दिया जाता है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	165	53.92
नहीं	141	46.08
कुल	306	100

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 53.92 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनको उचित वेतन दिया जाता है, जबकि 46.08 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उनके काम के अनुसार उचित वेतन नहीं दिया जाता है।

सारणीः 9

उत्तरदाताओं का रोजगार के लिए पलायन की दशा में अपनी मूल पहचान छुपाने संबंधी विवरण–

क्या आप रोजगार के लिए पलायन की दशा में अपनी मूल पहचान छुपाते हैं?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	70	22.87
नहीं	236	77.13
कुल	306	100

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 77.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि रोजगार के लिए पलायन की दशा में वे अपनी मूल पहचान नहीं छुपाते हैं, जबकि 22.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार किन्ही कारणों से अपनी मूल पहचान छुपाते हैं।

सारणीः 10

उत्तरदाताओं का नौकरी के दौरान जातिगत भेदभाव का सामना करने के आधार पर विवरण–

क्या शहरी क्षेत्र में नौकरी के दौरान आपको जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ता है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	102	33.33
नहीं	204	66.67
योग	306	100

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 66.67 उत्तरदाता कहते हैं कि नौकरी के दौरान उन्हें जातिगत भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा है, जबकि 33.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जवाब हां में है।

सारणीः 11

उत्तरदाताओं की सामाजिक प्रस्थिति में व्यवसाय की भूमिका का विवरण

क्या नवीन व्यवसाय ने आपकी सामाजिक प्रस्थिति में सुधार किया है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	254	83.00
नहीं	52	17.00
कुल	306	100

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 83.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि उनके चयनित व्यवसाय के कारण उनकी सामाजिक पद प्रस्थित में गतिशीलता आयी है, जबकि 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जवाब नहीं में है।

सारणीः 12

उत्तरदाताओं का रोजगार के बेहतर संसाधनों की वजह से पद–प्रस्थिति में गतिशीलता के आधार पर विवरण–

क्या रोजगार के बेहतर संसाधनों की वजह से आपकी पद–प्रस्थिति में गतिशीलता आयी है?		
विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	298	97.38
नहीं	08	2.62
योग	306	100

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 97.38 प्रतिशत उत्तरदाताओं की रोजगार के बेहतर संसाधनों की वहज से उनकी पद–प्रस्थिति में गतिशीलता आयी है, जबकि 2.62 प्रतिशत का जवाब नहीं में है।

निष्कर्षः

संकलित तथ्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अन्तरपीढ़ी अनुक्रम में परम्परागत व्यवसाय से आधुनिक व्यवसाय की ओर व्यवसायिक गतिशीलता की दर बढ़ी है। अनुसूचित जातियों में ऊर्ध्व एवं क्षैतीज दोनों प्रकार की गतिशीलता देखने को मिली है। जहां पहले की पीढ़ी परम्परागत व्यवसाय में लगी हुई थी वहीं 53.92 प्रतिशत नवीन व्यवसाय व 18 प्रतिशत सरकारी नौकरी में लगी हुई हैं। नवीन व्यवसाय को अपनाने के कारण सर्वाधिक 45.10 प्रतिशत व्यक्ति व्यवसाय की हीनता को मानते हैं तथा सर्वाधिक 71.90 प्रतिशत व्यक्ति मानते हैं कि उनको नवीन व्यवसाय में अधिक कार्य अवसर मिलते हैं। सर्वाधिक 53.92 प्रतिशत व्यक्ति मानते हैं कि उनको उनकी कार्यक्षमता के आधार पर उचित वेतन मिलता है। वहीं सर्वाधिक 66.67 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि उनको कार्यस्थल पर जातिगत भेदभाव का सामना अब नहीं करना पड़ता है। व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता मिलने के फलस्वरूप 97.38 प्रतिशत व्यक्ति मानते हैं कि बेहतर रोजगार संसाधनों की वजह से उनकी पद–प्रस्थिति में गतिशीलता आयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. Xaxa Virginius, 2001, Protective discrimination: Why Scheduled Tribes lag Behind Scheduled Castes, EPW, Vol. No. 35 (29), July 21, Pp. 2765.

2. शर्मा सुमित्रा (2021): वैश्विकरण, सामाजिक गतिशीलता एवं अनुसूचित जाति, रावत पब्लिकेशन जयपुर।

3. कंचन, 2012, अनुसूचित जातियों में वैयक्तिक गतिशीलता, शोध प्रबन्ध।

4. Karade Jagan, 2009.Occupational Mobility among Scheduled Caste, Cambridge Scholars Publicing,ISBN..1-4438-0989-6.

5. Butool Falak(2018).Occupational Mobility among Scheduled Cate workers.SAGE Journals.Volume 10 issue 2.

6. Mahapatro.Sandhya.R.& Chaodhary.Renu,2022,Inergenerational Educational & Occupational Mobility among Scheduled Caste in Rural Bihar, Journals of social and economic development 24,65-84.

7. अहूजा राम, 2015: सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन जयपुर।